P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-I*September-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत के सामाजिक आर्थिक परिवर्तन में पं0 जवाहर लाल नेहरू की भूमिका

हेमन्त कुमार मिश्र
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
स्वामी देवानन्द पी.जी. कॉलेज,
मठलार, देवरिया

सारांश

स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान ही यह निश्चित हो चुका था कि भारत में आजादी मिलने के पश्चात लोकतन्त्रात्मक शासन प्रणाली को अपनाया जायेगा। साथ ही स्वतन्त्रता के पश्चात देश के विकास में आड़े आने वाली समस्याओं पर विचार–विमर्श होने लगा था। भारत में व्याप्त सामाजिक आर्थिक विषमता, गरीबी, भुखमरी, पिछड़ापन, अशिक्षा, आय की असमानता, भूमिहीन मजदूरों की अपार संख्या इत्यादि भारत के विकास में अवरोध उत्पन्न करने वाले प्रमुख कारण थे। परम्परागत कृषि का तरीका भी पिछड़ेपन का कारण था। मिश्रित अर्थव्यवस्था को नेहरू जी ने भारत के विकास के लिए उत्तम साधन माना था।

मुख्य शब्द : सामजिक, आर्थिक,जनतान्त्रिक,मिश्रित,औद्योगिक,नियोजित,पंचवर्षीय, समाजवादी।

प्रस्तावना

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान ही यह निश्चित हो चुका था कि भारत में आजादी के पश्चात लोकतन्त्रात्मक शासन प्रणाली की स्थापना होगी। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू का भी मानना था कि लोकतन्त्र का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता से नहीं है, अपितु आर्थिक स्वतन्त्रता भी इसमें शामिल है। आर्थिक स्वतन्त्रता के बिना राजनीतिक स्वतन्त्रता अधूरी है।[1] स्वतन्त्रता आन्दोलन के अन्तिम पड़ाव तक आते आते नेहरू के मन में स्वतन्त्र भारत के लिए एक समाजवादी लोक कल्याणकारी राज्य का चित्र मन–मस्तिष्क में पूरी तरह से स्थापित हो चुका था।[2] 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ। नेहरू के नेतृत्व में सरकार का गठन हुआ। निश्चित तौर पर जनतांत्रिक क्रान्ति के पहले मंजिल को पाया जा चुका था। नेहरू ने अपने प्रसिद्ध अर्द्धरात्रि के सम्बोधन में कहा था ''दूसरी मंजिल अभी शेष है, और वह आर्थिक और सामाजिक पुनर्निमाण की मंजिल है।''[3]

इसी दूसरी मंजिल पर पहुॅचने के लिए यह आवश्यक था कि भारत में व्याप्त आर्थिक और सामाजिक विषमता को समाप्त किया जाय, और धन का न्यायपूर्ण वितरण किया जाय। वितरण को न्यायपूर्ण बनाने के लिए उत्पादन का पर्याप्त होना आवश्यक होता है, और उत्पादन के पर्याप्त होने के लिए औद्योगीकरण आवश्यक होता है। 1947 के भारत में ऐसा कुछ भी नहीं था। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए नेहरू ने 1948 में स्वतन्त्र भारत के प्रथम औद्योगिक नीति की घोषणा की। इस घोषणा में मिश्रित अर्थव्यवस्था को भारत के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना गया था। मिश्रित अर्थव्यवस्था का तात्पर्य ऐसी अर्थव्यवस्था से है जिसमें निजी तथा सार्वजनिक उद्योग साथ–साथ स्थापित किये जायें। अंग्रेजों के शासनकाल में जो थोड़े बहुत निजी उद्योग थे उनको नेहरू ने राष्ट्रीकृत करना उचित नहीं माना।[4] उनका मानना था कि भारतीय उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र में रखा जाना चाहिए। भारी उद्योगों में भी जो उद्योग प्रतिरक्षा महत्व के नहीं थे, और जिन पर व्यक्तिगत स्वामित्व था, उन्हें उसी प्रकार रहने दिया जाना चाहिए। नये कारखानों की स्थापना का अधिकार राज्य के पास सुरक्षित होना चाहिए।

1948 की घोषित औद्योगिक नीति में सरकारी स्वामित्व केवल तीन उद्योगों तक सीमित रखा गया था–

1. गोला बारूद
2. अणु शक्ति
3. रेलवे।

छः अन्य क्षेत्र (कोयला, इस्पात, विमान उत्पादन, जलपोत निर्माण, तार तथा टेलीफोन, खनिज पदार्थ) में उद्योग स्थापित करने का अधिकार सरकार के पास सुरक्षित था। इन क्षेत्रों में पहले से स्थापित निजी कारखानों को आने वाले दस वर्षों तक के लिए जारी रहने तथा राष्ट्रीकरण से मुक्त कर दिया गया था। शेष औद्योगिक क्षेत्रों को सामान्यतः निजी उद्योगों के लिए छोड़ दिया गया था।[5] हालांकि नेहरू का मानना था कि निजी क्षेत्र के अन्तर्गत स्थापित उद्योगों पर वांछित नियन्त्रण होना चाहिए क्योंकि इनका मनमानी ढंग से बढ़ना लोक कल्याणकारी राज्य के लिए ठीक नहीं होगा।[6]

नेहरू को नियोजित अर्थ व्यवस्था की प्रेरणा सोवियत संघ में संचालित पंचवर्षीय योजनाओं से प्राप्त हुई थी।[7] 1938 से 1940 में जवाहर लाल नेहरू ने योजना समिति के अध्यक्ष के तौर पर जो रिपोर्ट लिखी थी, वह योजनाबद्ध विकास के प्रति उनकी गहन आस्था की तरफ संकेत करती है। नेहरू ने योजना समिति की अध्यक्षता करते हुए दो प्रमुख समस्याओं का सामना किया था। पहली समस्या के रूप में कांग्रेस में वे समाजवादी लोग थे जो व्यक्तिगत लाभ के विरोधी थे और इसकी समाप्ति चाहते थे। वहीं दूसरी समस्या उन लागों की थी जो स्वतन्त्र उद्योगों और लाभ की दृष्टि से उत्पादन वृद्धि पर ज्यादा जोर दे रहे थे। वहीं कुछ कांग्रेस के कार्यकर्ता राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता जैसे शब्दों का भी इस्तेमाल करने लगे थे। नेहरू को इन सबके बीच समन्वय स्थापित करना था जो की अपने आप में कठिन कार्य था।

जवाहर लाल नेहरू 1946 में गठित अन्तरिम सरकार के अध्यक्ष बने थे। अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण करते ही उन्होंने तुरन्त ही नियोजित अर्थव्यवस्था की तरफ कदम उठाने शुरू कर दिये थे। उन्होंने एक सलाहकार बोर्ड की स्थापना की थी। यह बोर्ड देश के विकास की सम्भावनाओं का पता लगाने के लिए गठित किया गया था। इसे यह भी बताना था कि किन–किन बातों केा प्राथमिकता देनी है। इसके अतिरिक्त इसे योजना विकास के लिए एक निश्चित ढांचे की भी सिफारिश करनी थी।[8] नेहरू नियोजित अर्थ व्यवस्था के माध्यम से ही भारत का सामाजिक आर्थिक विकास चाहते थे। 1949 में उन्होंने इस कार्य में परामर्श देने के लिए एक अमेरिकी विशेषज्ञ डॉ0 सालोमन ट्रोन को भी नियुक्त किया था। इनको विभिन्न देशों में इस विषय पर कार्य करने का काफी अनुभव था।[8] नेहरू यह विश्वास करते थे कि नियोजित अर्थव्यवस्था देश में आर्थिक समृद्धि तो लायेगी ही साथ ही साथ लोगों में जागरूकता भी ले आयेगी।

नेहरू कहा करते थे कि भारत के नवनिर्माण के लिए संगठित प्रयास ही नहीं अपितु उत्साह और जोश से भरपूर प्रयासों की भी आवश्यकता है। नेहरू जी नियोजन को भारत के रूढ़िवादी समाज को प्रगतिशील आधुनिक समाज में बदलने का साधन भी मानते थे।[9] अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने 1950 में योजना आयोग की स्थापना की थी। इस आयोग का प्रमुख कार्य नियोजन के लिए आवश्यक अनुसंधान करना था तथा दूसरा प्रमुख कार्य अखिल भारतीय योजना का प्रारूप तैयार करना था। आगे चलकर इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु 1954 में राष्ट्रीय विकास परिषद् की स्थापना की गयी थी। इन निकायों में अर्थशास्त्रियों का एक दल परामर्श देने का कार्य करता था।

प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाओं में नेहरू का योगदान प्रमुख है। इसके निर्माण में नेहरू की भूमिका प्रमुख थी। यह स्वयं योजनाओं का प्रारूप पढ़कर उन पर टिप्पणी किया करते थे। योजनाओं के लक्ष्य, उद्देश्य और प्राथमिकताओं को निश्चित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। वे राष्ट्रीय विकास परिषद की हर बैठक में स्वयं उपस्थित रहते थे तथा आवश्यकतानुसार अपने विचार व्यक्त करते थे।[10] प्रथम पंचवर्षीय योजना एक कृषि प्रधान योजना थी क्योंकि इसमें कृषि पर सर्वाधिक बल प्रदान किया गया था। इसमें भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्म निर्भर बनाने पर जोर दिया गया। द्वितीय पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य देश को तीव्र औद्योगिक विकास के पथ पर चलाना था। तीसरी पंचवर्षीय योजना नेहरू के नेतृत्व में बनी अन्तिम योजना थी। इसके उद्देश्य राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना, कृषि में आत्म निर्भर करना, आधारभूत उद्योगों का विकास करना, आय में वृद्धि करना तथा सम्पत्ति की असमानता को दूर करना रखा गया था। हालांकी तृतीय पंचवर्षीय योजना अपने लक्ष्यों के करीब भी नहीं पहुँच पायी थी और असफल रही थी। इसके प्रमुख कारण थे 1962 का भारत–चीन युद्ध, 1965 का भारत–पाकिस्तान युद्ध तथा 1965–66 के दौरान पड़ा भीषण अकाल।

नेहरू इस बात से भली–भाँति परिचित थे कि भारत का विकास ग्रामों के विकास के साथ–साथ बंधा हुआ है। भारत का भविष्य किसानों के भविष्य के साथ जुड़ा हुआ है। नेहरू के समक्ष सबसे बड़ी समस्या यह थी कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात 30 करोड़ किसानों को किस प्रकार परम्परागत सामाजिक आर्थिक ढांचे से बाहर निकाला जाय। इसी को ध्यान में रखते हुए नेहरू ने सामुदायिक विकास योजना की शुरूआत की थी। सामुदायिक विकास कार्यक्रम की शुरूआत 02 अक्टूबर, 1952 को गाँधी जयन्ती के अवसर पर की गयी थी। इसे देश के 55 चुने हुए क्षेत्रों में लागू किया गया था। योजना का लक्ष्य भारत के गाँवों को स्वावलम्बी बनाना था। नेहरू का मत था कि, लोकतन्त्र की सफलता के लिए आर्थिक विकेन्द्रीकरण का होना जरूरी है। और आर्थिक विकेन्द्रीकरण के लिए लघु उद्योग तथा कुटिर उद्योगों का होना भी आवश्यक है। हालांकी नेहरू जी गाँधी जी की तरह गाँधी की तरह कुटीर उद्योगों के पक्षधर नहीं थे फिर भी 1948 में उन्होंने कुटीर उद्योग बोर्ड की स्थापना की थी। नेहरू जी का मत था कि ग्रामीण और शहरी भारत के बीच में कुटीर उद्योग और लघु उद्योग एक पुल का कार्य करेंगे।

भारत में आजादी के बाद समाजवादी व्यवस्था को स्थापित करना एक बड़ा कदम था। किसी भी नीति की सफलता बहुत कुछ परिस्थितियों पर निर्भर करती है। भारत को आजादी के साथ ढेर सारी विपत्तियाँ उपहार स्वरूप अपने आप मिली थीं। भुखमरी और गरीबी तो

पहले से ही थी, पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थियों के संकट को हल करना किसी युद्ध को जीतने से कम नहीं था। इन्हीं तमाम परिस्थितियों का सामना करते हुए नेहरू जी ने देश को नयी दिशा देने का प्रयास किया। नेहरू ने जब भारत में आर्थिक सामाजिक परिवर्तन का प्रयास शुरू किया था तो कुछ मूल समस्यायें पहले से विद्यमान थीं, जैसे–जमींदारी प्रथा, कृषकों की बदहाल आर्थिक स्थिति, ऋण ग्रस्तता, कृषि का पिछड़ापन, बेगार प्रथा, सिंचाई के साधनों का अभाव, कम उत्पादन, अशिक्षा, बेकारी, सामाजिक विषमता इत्यादि। इन सभी समस्याओं से निपटने के लिए नेहरू ने समेकित प्रयास किया था जैसे सहकारिता, सामुदायिक विकास योजना, सिंचाई योजनायें, जमींदारी प्रथा का अन्त, अन्य भूमि सम्बन्धी सुधार, ग्रामों में शिक्षा का प्रसार, कुटीर व लघु उद्योगों की स्थापना, ग्रामीण विद्युतीकरण, खेती में नये संसाधनों का प्रयोग, बंजर तथ बेकार भूमि का वितरण, परिवार नियोजन, भूमि संरक्षण, भूमिहीनों को भूमि देना, भूमिहीन मजदूर तथा कृषकों के शोषण से रक्षा के लिए कानून बनाना इत्यादि।

उद्देश्य

स्वतन्त्रता प्राप्त होने के पश्चात भारत के सामाजिक तथा आर्थिक ढांचे में आमूल–चूल परिर्वतन करके भारत की अर्थव्यवस्था को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खड़ा करने में नेहरू जी की भूमिका का सिंहावलोकन करना।

निष्कर्ष

भारत की तत्कालीन अर्थव्यवस्था, सैन्य ढांचा, राजनीतिक ढांचा तथा प्रशासनिक व्यवस्था ये सभी कमोबेश पश्चिमी व्यवस्था से प्रभावित थे। भारत पर अंग्रेजो ने लम्बे समय तक शासन किया था और यूरोपियन पद्धति की शासन व्यवस्था स्थापित की थी। ऐसे में पश्चिमी देशों के हस्तक्षेप को भारत में समर्थन मिलना स्वाभाविक था। सम्भवतः इसी कारण से भारत की तत्कालीन परिस्थितियों में नेहरू ने एक ऐसा मार्ग चुना जिससे की आने वाले कल में युद्ध की विभिषिका को टाला जा सके। उस समय कांग्रेस पार्टी के संगठन में भी पूंजीवादी और समाजवादी ताकतों का मिश्रण था। किसी भी एक को न तो पूर्णरूपेण स्वीकार किया जा सकता था और न ही किसी एक को नकारा जा सकता था। इन दोनों ताकतो के सह–अस्तित्व को नेहरू ने स्वीकार किया था और एक मिश्रित अर्थव्यवस्था की नींव डाली थी। यह व्यवस्था आन्तरिक सह–अस्तित्व की आधारशिला पर टिकी थी और इसी से प्रभावित होकर आगे चलकर विदेश नीति में गुट निरपेक्षता का विकास हुआ था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- चौधरी, रामनरायण, नेहरू अपनी ही भाषा में, नवजीवन अहमदाबाद, 1962, पृ0–114
2- मोरेस, फ्रैंक, जवाहर लाल नेहरू–एक जीवनी, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, पृ0–330
3- नेहरू, व्यक्तित्व और विचार, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली, 1965
4- नेहरू, जवाहर लाल, इंडिपेन्डेंस एण्ड आफ्टर, प्रकाश विभाग, नई दिल्ली, पृ0–164
5- मिश्रा, कृष्णकान्त, भारत की राजनीतिक प्रणाली, मैकमिलन दिल्ली, 1976, पृ0–76
6- घोष, शंकर, सोशलिज्म एण्ड कम्यूनिज्म इन इण्डिया एलाईड, नई दिल्ली, 1964
7- परांजय, एच0 के0, जवाहर लाल नेहरू एण्ड प्लानिंग कमीशन, 1964, नई दिल्ली, पृ0–15
8- नेहरू, जवाहर लाल, नेहरू स्पीचेज, भाग–2, 1952, पृ0–96
9- नेहरू, जवाहर लाल, नेहरू स्पीचेज, भाग–3, 1952, पृ0–53
10- टाइसन, ज्योफ्रे, नेहरू दी इयर्स ऑफ पावर्स, पालमाल प्रेस, लन्दन, 1966, पृ0–23